(1)

BA (मै)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - वन
पत्रहीन नग्न गाछ
Lecture-I

प्रो० रंजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क काव्य प्रतिभा:

यथार्थमूलक इएबाक कारणें यात्रीजीक साहित्य मैथिली जगत मे क्रान्ति आनि देलक, ठेठ ग्रामीण भाषा मे सुन्दर सरस, आ मार्मिक कविताक सृजन करब यात्रीजी क प्रतिभाक वैशिष्ट्य थिक। मैथिली कविता के ई राजप्रासादक ड्योढ़ी स उठाकऽ सबके बेर गरीबक झोपड़ी मे पहुँचा देलनि। ई जे स्वप्न देखलनि से आर साकार भऽ रहल अछि यथा –
"तोहर मर्म दौड़ल छह लोकक दिस, धेध-धेध धानक दिस
मिल दरबार दिस, गरीबक दिस ककर जाइत छै
नजरि, के तके अछि हमर तोहर धार दिस,।

हिनक कविता, कविक स्वप्न, पहला सँ अधिक
वर्ग मे जागृति आएल। ग्रामजीवीक जयगान होबए
लागल।

कविवर यात्रीजी कैं अपन मिथिला सँ
प्रेम छलनि। 'माँ मिथिले' नामक कविता मे आदि-
काल सँ आइ धरि कविवर चन्दा झा धरिक व्यक्तित्वक
गौरव गाथा गाओल गेलैक अछि। एहि कविताक
ऐतिहासिक महत्व अछि। चन्दा झाक रामायण मे मिथिला
वर्णनक उपरान्त यात्रीजीक एहि रचना मे मिथिलाक
गौरव सम्पूर्ण वाणी पौलक अछि। हमरा लोकनि
आइ अपन मिथिलाक गौरव कैं भलहि विस्मृत
कऽ दी किन्तु एहि गौरवक इतिहास कैं कियो
विस्मृत नहि कऽ सकैछ। यात्री जीक शब्द मे:-

मुनिक शान्तिमय पर्णकुटी मे,
तापसीक अध्ययन भृकुटी मे
साम गानक मुखरित कुटी मे,
छल आँखक आदर्श, बिसरि गेलहुँ से हम,
किन्तु ने लोपल अछि इतिहास।

माँ मिथिले कविता मे यात्रीजी मिथिलाक ऐतिहासिक
ऐश्वर्यक वर्णन स्वभाविक रूपेँ कयलनि अछि जे
कविक हृदयक भावनाक द्योतक थीक। भौतिक प्रणाम
द्वारक भीतर समग्र रचनाक जरबा आ बोध दीला
लइ क' रहल छलाह।

15 अगस्त 1947 ई० मे यात्रीजीक लिखल
वन्दना शीर्षक कविता मे हुनक देश प्रेम स्पष्टतः
देखल जा सकैत अछि। भारत कैं स्वतंत्र भेला सँ
कवि अपन हृदयक खुशी कें शब्द दैत कहैत

अंत छवि :-

" आइछ मोन कतेको युग पछाति, ई महादेश स्वाधीन आइ,
पहिलकी पतना ओ दरकौंगा . फहराइछ लाल की ओ तिरंगा.

दुनू मानव निर्माण आइ, मालिक जन-गण सम्प्राण आइ,
नव नीत-मंत चिन्ताधारा, नवयुग चन्द्र नवतारा।

एहि आनन्दक चित्रण कऽ कवि अपन देशभक्तिक भावनाक परिचय देलनि अछि। अपन मातृभूमिक, देश कोस, बाध बोन चास बास माटि पानि लऽ सम्पूर्ण राष्ट्रक आन्दोलनक अवसर पर कएल गेल रचना सभ नवीन आशा, नवीन कल्पना सँ युक्त मानिक अछि।

क्रमशः:-

Sanjit Kumar
10/08/20